भारतीय इस्लामिक परम्परा

भारत में इस्लाम धर्म का आगमन अरब व्यापारियों के साथ ७वीं सदी से माना जाता है लेकिन भारत में प्रारंभिक मुस्लिम सुल्तान १०वीं सदी में आये थे । **भारतीय गणतंत्र** में हिन्दू धर्म के बाद **इस्लाम** दूसरा सर्वाधिक प्रचलित धर्म माना जाता है ।

इस्लामी प्रभाव को सबसे पहले अरब व्यापारियों के आगमन के साथ 7वीं शताब्दी के प्रारम्भ में महसूस किया जाने लगा था। प्राचीन काल से ही अरब और भारतीय उपमहाद्वीपों के बीच व्यापार संबंध अस्तित्व में रहा है। इस्लाम के आगमन के साथ ही अरब वासी दुनिया में एक प्रमुख सांस्कृतिक शक्ति बन गए।

भारतीय इस्लामिक परम्परा

भारत में इस्लाम का आगमन करीब 7वीं शताब्दी में हुआ था (629 ईसवी सन्) और तब से यह भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक अभिन्न अंग बन गया है। कई वर्षों से, सम्पूर्ण भारत में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों का एक अद्भुत मिलन होता आया है और भारत के आर्थिक उदय और सांस्कृतिक प्रभुत्व में मुसलमानों ने महती भूमिका निभाई है।

राम वर्मा कुलशेखर के आदेश पर भारत में प्रथम मस्जिद का निर्माण ई॰ 629 में हुआ था, जिन्हें मलिक बिन देनार के द्वारा केरल के कोडुंगालूर में मुहम्मद (c. 571–632) के जीवन समय के दौरान भारत का पहला मुसलमान भी माना जाता है।

8वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम की अगुवाई में अरब सेना द्वारा सिंध प्रांत (वर्तमान में पाकिस्तान) पर विजय प्राप्त की गई। 10वीं सदी के प्रथम अर्द्ध भाग में गजनी के

महमूद ने पंजाब को गज़नविद साम्राज्य में जोड़ा और आधुनिक समय के भारत में कई छापे मारे।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भूमिका

हैदर अली और बाद में उनके बेटे टीपू सुल्तान, जिसे टाइगर ऑफ मैसूर के रूप में जाना जाता है, प्रमुख भारतीय राजाओं में से एक थे जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई की थी।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सम्पूर्ण इतिहास में 'बिस्मिल' और 'अशफाक' की भूमिका निर्विवाद रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता का अनुपम आख्यान है। अशफाक उल्ला खाँ भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। खान अब्दुल गफ्फार खान एक महान राष्ट्रवादी थे ।

अब्दुल वक्कोम खदिर ने 1942 के 'भारत छोड़ो' में भाग लिया । मुसलमान महिलाओं में हजरत महल, अस्घरी बेगम, बाई अम्मा ने ब्रिटिश के खिलाफ स्वतंत्रता के संघर्ष में योगदान दिया है। बंगाल में नवाब सिराजुद्दौला ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का सामना किया और ब्रिटिशों से युद्ध किया । मौलाना आजाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता और हिन्दू मुस्लिम एकता की वकालत करने वाले थे। 1920 के दशक के उत्तरार्ध में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और ऑल इंडिया मुस्लिम लीग को अलग-अलग दृष्टिकोण से मान्यता दी गई ।

इंडो-इस्लामी कला

12वीं सदी के अंत में भारत में इस्लामी शासन के आगमन के साथ ही भारतीय वास्तुकला ने एक नया रूप धारण किया। सजावटी अभिलेख या सुलेख का उपयोग करते हुए शिलालेखात्मक कला; जड़ने वाली सजावट और रंगीन संगमरमर, 1193 ई॰ में निर्मित कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद भारतीय उपमहाद्वीप में बनने वाली पहली मस्जिद थी, इसके आसपास "टॉवर ऑफ विक्टरी", कुतुब मीनार का निर्माण भी लगभग 1192 ई॰में शुरू किया गया था, जो कि स्थानीय राजपूत राजा पर गजनी, अफगानिस्तान के मुहम्मद गोरी और उनके जनरल कुतबुद्दीन ऐबक की जीत को चिह्नित करता है, इस्लामी वास्तुकला धनुषाकार थी यानी एक मेहराब या गुंबद का इस्तेमाल रिक्त स्थान में पूल बनाने की योजना के रूप में अपनाया गया था।

भारत-इस्लामी वास्तुकला का विकास अधिकांशतः भारतीय कारीगरों के ज्ञान और कौशल द्वारा किया गया था, जिन्होंने कई शताब्दियों के दौरान पाषाण कारीगरी में महारत प्राप्त की थी और उन्होंने भारत में इस्लामी स्मारकों के निर्माण में अपने अनुभवों का इस्तेमाल किया।

भारत में इस्लामी स्थापत्य को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है: दिल्ली या इम्पीरियल शैली (1191 1557 ई.); प्रांतीय शैली, डेक्कन और जौनपुर जैसे आस-पास के क्षेत्रों को शामिल किया जाता है; और मुगल स्थापत्य शैली (1526 को 1707 ई.),[76]

अरब-भारतीय संपर्क

अरबिया में इस्लाम के आगमन से पहले, इस्लाम के प्रारम्भिक चरणों में भारत और भारतीयों के साथ अरब और मुसलमानों के संपर्क होने से संबंधित पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं । आठवीं सदी के प्रारम्भ में कई संस्कृत पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया गया।

सूफी इस्लाम का प्रसार

भारत में इस्लाम के प्रचार व प्रसार में सूफियों (इस्लामी मनीषियों) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस्लाम के प्रसार में उन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि कई मायने में सूफियों की विश्वास प्रणाली और अभ्यास भारतीय दार्शनिक साहित्य के साथ समान थी, विशेष रूप से अंहिंसा और अद्वैतवाद। इस्लाम के प्रति सूफी रूढ़िवादी दृष्टिकोण ने हिंदुओं को इसका अभ्यास करने के लिए आसान बनाया है।

हजरत ख्वाजा मुईन-उद-द्दीन चिश्ती, कुतबुद्दीन बख्तियार खुरमा, निजाम-उद-द्दीन औलिया, शाह जलाल, आमिर खुसरो, सरकार साबिर पाक, शेख अल्ला-उल-हक पन्द्धी, अशरफ जहांगीर सेम्नानी, सरकार वारिस पाक, अता हुसैन फनी चिश्ती ने भारत के विभिन्न भागों में इस्लाम के प्रसार के लिए सूफियों को प्रशिक्षित किया। इस्लामी साम्राज्य के भारत में स्थापित हो जाने के बाद सूफियों ने स्पष्ट रूप से प्रेम और सुंदरता का एक स्पर्श प्रदान करते हुए इसे उदासीन और कठोर हूकुमत होने से बचाया। सूफी आंदोलन ने कारीगर और अछूत समुदायों के अनुयायियों को भी आकर्षित किया; साथ ही इस्लाम और स्वदेशी परंपराओं के बीच की दूरी को पाटने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई।